(उपर्युक्त सभी वैयाकरण सिद्धान्त कौमुदी के पंक्त्यंश भाग को छोड़कर)

विस्तृत अंक विभाजन –

1. (क) संज्ञा प्रकरण	(i) छह सूत्रों में से तीन सूत्रों की व्याख्या	4 x 3 = 12 अंक
(ख) स्त्री प्रत्यय प्रकरण	(i) चार सूत्रों में से दो सूत्रों की व्याख्या	2.5 x 2 =5 अंक
	(ii) चार सिद्धियों में से दो सिद्धियां	4 x 2 = 8 अंक
2. आत्मनेपद प्रकरण एवं परस्मैपद प्रकरण	(i) छह सूत्रों में से तीन सूत्रों की व्याख्या (संस्कृत माध्यम से अनिवार्य)	4 x 3 = 12 अंक
	(ii) आठ सिद्धियों में से चार सिद्धियों की व्याख्या (संस्कृत माध्यम से अनिवार्य)	2 X 4 = 8 अंक
3. (क) भू धातु	(i) चार सूत्रों में से दो सूत्रों की व्याख्या	2.5 x 2 =5 अंक
	(ii) चार सिद्धियों मे से दो सिद्धियां	2.5 x 2 =5 अंक
(ख) एध् धातु	(i) चार सूत्रों में से दो सूत्रों की व्याख्या	2.5 x 2 =5 अंक
	(ii) चार सिद्धियों मे से दो सिद्धियां	2.5 x 2 =5 अंक
(ग) अन्य सभी गणों की प्रथम धातु	(i) आठ सिद्धियों में से चार सिद्धियां	2.5 x 4 =10 अंक
4. (क) तद्धित –मत्वर्थीय	(i) छः सूत्रों में से तीन सूत्रों की व्याख्या	3 x 3 = 9 अंक
	(ii) चार सिद्धियों में दो सिद्धियां	3 x 2 = 6 अंक
(ख) कृदन्त–कृत्य प्रक्रिया	(i) चार सूत्रों में से दो सूत्रों की व्याख्या	2.5 x 2 = 5 अंक
	(ii) चार सिद्धियों में दो सिद्धियां	2.5 x 2 = 5 अंक
	कुल योग	– 100 अंक

संस्तुत पुस्तकें –

1. वैयाकरण सिद्धान्त कौमुदी (बालमनोरमा–तत्त्वबोधिनी टीका), गिरिधर शर्मा चतुर्वेद एवं परमेश्वरानन्द शर्मा, दिल्ली
2. वैयाकरण सिद्धान्त कौमुदी (बालमनोरमा–दीपिका टीका) श्रीगोपालदत्त पाण्डेय, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
3. वैयाकरण सिद्धान्त कौमुदी (सविमर्श– रत्नप्रभा टीका) श्रीबालकृष्ण पंचोली, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी।
4. व्याकरण चन्द्रोदय– चारूदेव शास्त्री।

22

Asstt. Registrar
University of Rajasthan
Jaipur

द्वितीय प्रश्न पत्र – वैयाकरण सिद्धान्त कौमुदी तथा वाक्यपदीय

समय – तीन घण्टे पूर्णांक – 100

अवधेयम् – प्रश्न पत्र हिन्दी भाषा में बनाया जायेगा। 20 प्रतिशत अंक संस्कृत भाषा के माध्यम से पूछे जाने वाले प्रश्नों के लिए निर्धारित हैं। शेष प्रश्नों के उत्तर हिन्दी, अंग्रेजी अथवा संस्कृत भाषा के माध्यम से दिये जा सकते हैं।

1. वैयाकरण सिद्धान्त कौमुदी – अव्ययीभाव एवं तत्पुरुष समास प्रकरण 30 अंक
   (वैयाकरण सिद्धान्त कौमुदी के पंक्त्यंश भाग को छोड़कर)
2. वैयाकरण सिद्धान्त कौमुदी –बहुव्रीहि से सर्वसमासशेष प्रकरण पर्यन्त 25 अंक
   (वैयाकरण सिद्धान्त कौमुदी के पंक्त्यंश भाग को छोड़कर)
3. वाक्यपदीय –ब्रह्मकाण्ड। 45 अंक

विस्तृत अंक विभाजन –

1.	(क) अव्ययीभाव समास	(i) आठ सिद्धियों में से चार सिद्धियां	3 x 4 = 12 अंक
	(ख) तत्पुरुष समास	(i) बारह सिद्धियों में से छः सिद्धियां जिनमें से दो अनिवार्य रूप से संस्कृत भाषा में	3 x 6 = 18 अंक
2.	(क)बहुव्रीहि समास	(i) आठ सिद्धियों में से चार सिद्धियां	3 x 4 = 12 अंक
	(ख) द्वन्द्व समास	(i) छः सिद्धियों में से तीन सिद्धियां	3 x 3 = 9 अंक
	(ग)एकशेष एवं सर्वसमासशेष प्रकरण	(i) दो में से एक व्याख्या संस्कृत में अनिवार्य	4x 1 = 4 अंक
3.	(क) कारिका संख्या 1 से 42 तक दो में से एक कारिका की व्याख्या (संस्कृत भाषा में अनिवार्य)		10 अंक
	(ख) कारिका संख्या 43 से 106 तक दो में से एक कारिका की व्याख्या		10 अंक
	(ग) कारिका संख्या 107 से 146 तक दो में से एक कारिका की व्याख्या		10 अंक
	(घ) विषय वस्तु पर आधारित दो प्रश्नों में से एक प्रश्न का उत्तर		10 अंक
	(ङ) विषय वस्तु पर आधारित दो लघु प्रश्नों में से एक लघु प्रश्न का उत्तर		5 अंक
		कुल योग –	100 अंक

संस्तुत पुस्तकें –

1. वैयाकरण सिद्धान्त कौमुदी (बालमनोरमा–तत्त्वबोधिनी टीका), गिरिधर शर्मा चतुर्वेद एवं परमेश्वरानन्द शर्मा, दिल्ली
2. वैयाकरण सिद्धान्त कौमुदी (बालमनोरमा–दीपिका टीका) श्रीगोपालदत्त पाण्डेय, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी

Asstt. Registrar (Acad I)
University of Rajasthan
Jaipur

23

3. वैयाकरण सिद्धान्त कौमुदी (सविमर्श– रत्नप्रभा टीका) श्रीबालकृष्ण पंचोली, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी।
4. व्याकरण चन्द्रोदय– चारूदेव शास्त्री
5. वाक्यपदीयम् – (अम्बाकर्त्री व्याख्या), रघुनाथ शर्मा
6. वाक्यपदीयम् – (भावप्रकाश व्याख्या), सूर्यनारायण शुक्ल
7. भर्तृहरि का वाक्यपदीय – के.ए.एस.अय्यर, रामचन्द्र द्विवेदी, राजस्थान हिन्दी अकादमी जयपुर।
8. वाक्यपदीयम् – डॉ. शिवशंकर अवस्थी, चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी।
9. संस्कृत व्याकरण दर्शन – रामसुरेश त्रिपाठी, दिल्ली।
10. अर्थविज्ञान और व्याकरण दर्शन– डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, हिन्दुस्तान अकादमी, इलाहाबाद।

तृतीय प्रश्न पत्र – प्रकरण ग्रन्थ तथा व्याकरणशास्त्र का इतिहास

समय – तीन घण्टे पूर्णांक – 100

अवधेयम् – प्रश्न पत्र हिन्दी भाषा में बनाया जायेगा। 20 प्रतिशत अंक संस्कृत भाषा के माध्यम से पूछे जाने वाले प्रश्नों के लिए निर्धारित हैं। शेष प्रश्नों के उत्तर हिन्दी, अंग्रेजी अथवा संस्कृत भाषा के माध्यम से दिये जा सकते हैं।

1. पाणिनीय शिक्षा – 20 अंक
2. कारक सम्बन्धोद्योत – 20 अंक
3. संस्कृत व्याकरणशास्त्र का इतिहास – 60 अंक

(क) पाणिनिपूर्व के वैयाकरण आचार्यो का योगदान।

(ख) मुनित्रय (पाणिनी, कात्यायन, पतंजलि) का काल एवं योगदान।

(ग) पाणिन्युत्तर व्याकरण–सम्प्रदायों का सर्वेक्षण : चान्द्र, कातन्त्र, शाकटायन, जैनेन्द्र, हैम, भोज, सारस्वत एवं मुग्धबोध व्याकरण।

(घ) अष्टाध्यायी की वृत्तिपरम्परा।

(ङ) पाणिनि–व्याकरण में प्रक्रिया ग्रन्थों का योगदान।

(च) पाणिनि परम्परा के दार्शनिक आचार्य– भर्तृहरि, भट्टोजिदीक्षित, कौण्डभट्ट, नागेश आदि।

विस्तृत अंक विभाजन –

1. (क) दो कारिका में से एक कारिका की व्याख्या
   10 अंक

(ख) ग्रन्थ की विषय वस्तु से सम्बन्धित चार लघु प्रश्नों में से दो प्रश्नों
10 अंक
का उत्तर अनिवार्य रूप से संस्कृत भाषा में देय होगा।

2. (क) कारिका संख्या 1 से 8 तक दो में से एक कारिका की व्याख्या 10 अंक
   (ख) कारिका संख्या 9 से 15 तक दो में से एक कारिका की व्याख्या 10 अंक
3. (क) तत्सम्बन्धी दो प्रश्नों में से एक प्रश्न का उत्तर 10 अंक
   (ख) तत्सम्बन्धी दो प्रश्नों में से एक प्रश्न का उत्तर 10 अंक
   (ग) तत्सम्बन्धी चार लघु प्रश्नों में से दो प्रश्नों का उत्तर 10 अंक
   (घ) तत्सम्बन्धी दो प्रश्नों में से एक प्रश्न का उत्तर 10 अंक
   (ङ) तत्सम्बन्धी दो प्रश्नों में से एक प्रश्न का उत्तर 10 अंक
   (च) तत्सम्बन्धी चार लघु प्रश्नों में से दो प्रश्नों का उत्तर 10 अंक
   (संस्कृत भाषा में अनिवार्य)

कुल योग –

100 अंक

संस्तुत पुस्तकें –

1. पाणिनीयशिक्षा – शिवराज आचार्यः कौण्डिन्न्यायनः, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।
2. पाणिनीय शिक्षा – एन.एम.घोष, दिल्ली।
3. कारकसम्बोधाद्योत – राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर, जयपुर।
4. कारकसम्बोधाद्योत – राजस्थान प्राच्य प्रतिष्ठान जोधपुर।
5. संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास – पं. युधिष्ठिर मीमांसक, सोनीपत।
6. पाणिनीकालीन भारतवर्ष – वासुदेव शरण अग्रवाल, पटना।
7. पतंजलि कालीन भारतवर्ष– प्रभुदयाल अग्निहोत्री, पटना।
8. संस्कृत व्याकरण का उद्भव और विकास– सत्यकाम वर्मा, दिल्ली।

वर्ग एफ ज्योतिषशास्त्र

प्रथमप्रश्नपत्र ज्योतिष विज्ञान, खगोल एवं ताजिकशास्त्र

समय– तीन घण्टे पूर्णांक–100

अवधेयम् प्रश्नपत्र हिन्दी भाषा में बनाया जायेगा। 20प्रतिशत अंक संस्कृत भाषा के माध्यम से पूछे जाने वाले प्रश्नों के लिए निर्धारित हैं। शेषप्रश्नों के उत्तर हिन्दी, अंग्रेजी अथवा संस्कृत भाषा के माध्यम से दिये जा सकते हैं।

1. वर्षपत्र निर्माण के सामान्य सिद्धान्त एवं वर्षफल कथन 20 अंक
   (i) वर्ष लग्न निर्माण प्राचीन एवं नवीन पद्धति के आधार पर
   (ii) मुन्था निर्णय एवं फल

Asstt. Registrar (Acad I)
University of Rajasthan
Jaipur

(iii) षोडशयोग एवं फल

(iv) त्रिपताकीचक्र निर्माण एवं फल

(v) वर्षपति निर्णय

2. ज्योतिषविज्ञान सम्बन्धी अपेक्षित बिन्दु 20 अंक

1. ज्येष्ठ माह की ज्योतिषीय महत्ता
2. देवशयन मांगलिक कार्य में बाधक क्यो?
3. नक्षत्रविज्ञान का जनक रहा है भारत
4. ज्योतिषरोग एवं उपचार
5. पुराणों में मंगल ग्रह की अवधारणा
6. ग्रहों का मानवीकरण व फलादेश
7. मांगलिक ग्रह अमांगलिक क्यों
8. त्रिपताका चक्र और ग्रहवेध
9. गोधूलि वेला विवाह के लिए श्रेष्ठ
10. वर्षायोग के ज्योतिषीय सिद्धान्त
11. भाग्यशालीयोग कन्या जन्म से भी होता है
12. बन्दीगृह योग में भी है श्रेष्ठ राजयोग
13. श्राद्धविज्ञान के मूलाधार सूर्यचन्द्र
14. पूर्वजन्म पुनर्जन्म एवं ज्योतिष
15. नक्षत्रों पर टिका है मुहूर्त व भविष्यफल
16. वास्तुशास्त्र की वस्तुस्थिति
17. सृष्टिप्रक्रिया का आधार चन्द्रमा
18. वायुधारिणी पूर्णिमा एवं वर्षायोग
19. शरदपूर्णिमा की रात पाइए अमृतप्रसाद
20. ज्योतिष में श्रावणी और रक्षाबन्धन
21. रक्षाबन्धन का वैज्ञानिक आधार
22. हृदय का स्पंदन और ज्योतिषशास्त्र
23. जन्माष्टमी और पंचामृत का ज्योतिषीय महत्त्व
24. श्रीकृष्ण का ज्योतिषीय महत्त्व
25. वैवाहिक निर्णयों में ज्योतिषीय भूमिका
26. पर्यावरणपरिवर्तन और वर्षा के ज्योतिषीय अनुमान
27. व्यक्तित्व विकास में ज्योतिष
28. सूर्यचन्द्रस्वर कार्यसिद्धि में सहायक
29. चिकित्सा में भूमिका निभाते है ग्रहयोग
30. मधुमेह की ज्योतिषीय चिकित्सा
31. महामृत्युंजय मन्त्र का ज्योतिषीय स्वरूप
32. देवप्रबोधिनी एकादशी का वैज्ञानिक आधार
33. ज्योतिषज्ञान आव यक क्यों?
34. सार्थक ही है विवाह हेतु गुणमिलान
35. कुण्डलीमिलान के बावजूद शादी क्यों नहीं
36. बुधादित्ययोग में आपका जीवन
37. सूर्यचन्द्र परिवेश का जनजीवन पर प्रभाव
38. कर्मवाद और ज्योतिषविज्ञान
39. ब्रह्माण्ड रहता है आपकी हथेली में
40. खगोल को भूगोल से जोड़ता है स्वस्तिमंत्र
41. ऊँनाद के साथ ही ग्रहनक्षत्रों की उत्पत्ति
42. इस्लामीतन्त्र एवं ज्योतिष
43. चेहरा आपके स्वभाव का दर्पण है
44. कब मिलती है चोरी गई वस्तु
45. ज्योतिषविज्ञान में प्रश्नतन्त्र
46. पौधारोपण करने से घर में लक्ष्मीनिवास

3. गोल परिभाषा 10 अंक

खमध्य,नाड़ीवलय, समवृत्त, उन्मण्डलवृत्त, उर्ध्वखस्वस्तिक, कदम्बधान, कदम्बप्रोतवृत्त, अयनप्रोतवृत्त,दृग्वृत्त, उन्नतांश, नतांश, अक्षांश, दिगंश,शर, विमण्डलवृत्त अहोरात्रवृत्त आदि की परिभाषा ही पृष्टव्य है।

4. प्रायोगिक परीक्षा 50 अंक

26

Asstt. Registrar (Acad I)
University of Rajasthan
Jaipur

प्रायोगिक परीक्षा में जयपुर स्थित ज्योतिष यन्त्रालय, जंतर मंतर सिटी पैलेस के पास में विद्यमान यन्त्रों में से शंकुयन्त्र, लघुसम्राटयन्त्र, बृहद् सम्राटयन्त्र, चक्रयन्त्र, षष्ठ्यंश यन्त्र, भित्तियन्त्र, रामयन्त्र, दिगंशयन्त्र, नाड़ीवलय न्त्र, आदि से ग्रह नक्षत्रों एवं सूर्य की वेध प्रक्रिया क्रान्ति आदि की जानकारी के साथ महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय द्वारा निर्मित दिल्ली, वाराणसी, उज्जैन, मथुरा, जयपुर के यन्त्रालयों की ऐतिहासिक जानकारी मापदण्ड रहेगी।

सहायक ग्रन्थ

1. गोलीस रेखागणितम्– श्री मीझालाल ओझा, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी
2. गोलपरिभाषा, श्री गणपति लाल शर्मा
3. यन्त्रालयपरिचय पं. गोकुलचन्द भावन

द्वितीय प्रश्नपत्र– वास्तुविज्ञान एवं मुहूर्त

समय– तीन घण्टे पूर्णांक–100

अवधेयम् प्रश्नपत्र हिन्दी भाषा में बनाया जायेगा। 20प्रतिशत अंक संस्कृत भाषा के माध्यम से पूछे जाने वाले प्रश्नों के लिए निर्धारित हैं। शेषप्रश्नों के उत्तर हिन्दी, अंग्रेजी अथवा संस्कृत भाषा के माध्यम से दिये जा सकते हैं।

1. वास्तुशास्त्र के सामान्य सिद्धान्त (निम्नशीर्षकों के आधार पर) 50 अंक

1. वास्तु एक वैज्ञानिक अवधारणा
2. वास्तुपुरुष विधान
3. कांकिणी / ग्रामवास विचार
4. भूमि परीक्षण
5. भूमिशोधन
6. प्राचीन एवं आधुनिक माप प्रणाली
7. भूमि का ढ़लान
8. भूखण्ड की आकृति
9. आयादि लक्षण
10. विविध वास्तुचक्र
11. वास्तुपुरुष विधान एवं मर्मस्थान
12. गृहारम्भ मुहूर्त
13. भूमि का अधिग्रहण, बलिकर्म व गर्भविन्यास
14. विविधगृह
15. मुख्यद्वार
16. गृहके समीप वृक्ष
17. भवन के विभिन्न भाग
18. द्वारवेध
19. भवन के विभिन्न कक्षों की स्थिति
20. गृहप्रवेश मुहूर्त
21. औद्योगिक वास्तु
22. देववास्तु
23. व्यावसायिकवास्तु
24. ज्योतिष, वास्तु एवं आधुनिक वास्तुशास्त्र
25. वास्तुसूत्र
26. पिरामिडशक्ति
27. फेंगशुई
28. वास्तुदोष निवारण

2. मुहूर्त चिन्तामणि– श्रीरामदैवज्ञ विरचित 50 अंक

शुभाशुभ प्रकरण से– तिथि स्वामी, तिथिसंज्ञा, सिद्धियोग, चैत्रादि मासों में शून्य तिथि, शून्य नक्षत्र, शून्य राशि, आनन्दादि अट्ठाइसयोग, सर्वार्थसिद्धियोग, शुभकार्य में

Asstt. Registrar (Acad I)
University of Rajasthan
Jaipur

27

वजर्यपदार्थ, भद्राविचार, गुरु-शुक्रास्त में वर्जित कार्य सिंहस्थ गुरु में वर्ज्यावर्ज्य का विचार एवं वार प्रवृत्ति मात्र।

नक्षत्र प्रकरण से—नक्षत्रों के स्वामी, ध्रुव, ध्रुव चर, उग्र, मिश्र, लघु, मृदु, तीक्ष्ण, संज्ञाक नक्षत्र एवं कृत्य, दुकान खोलने का मुहूर्त, वाहन (हाथी-घोडा, कार, स्कूटर आदि) खरीदने का मुहूर्त, अन्धादि नक्षत्र एवं फल, नौकरी करने का मुहूर्त, होमाहूति एवं अग्निवास ज्ञान।

संस्कार प्रकरण—सीमंत संस्कार मुहूर्त, प्रसूती स्त्री के स्नान का मुहूर्त, जलपूजन मुहूर्त, शुभकर्मों का विधिकाल, मुंडन मुहूर्त, अक्षराम्भ मुहूर्त, विद्यारम्भ मुहूर्त, यज्ञोपवीत मुहूर्त, गुरुशुद्धि एवं अपवाद।

विवाह प्रकार—वरवरण-कन्यावरण मुहूर्त, अष्टकुट गुण का मिलान (सारणी द्वारा) सामान्य परिचय मात्र दिन-रात्रि के मुहूर्त, अभिजितकाल निर्धारण।

सहायक ग्रन्थ—

1. मुहूर्त चिन्तामणि—श्रीराम देवज्ञ विरचित मास्टर बिहारीलाल समताप्रसाद, वाराणसी, प्रकाशक राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर
2. [illegible]

तृतीय प्रश्नपत्र—जन्म पत्र-निर्माण, फलादेश के सिद्धान्त

समय—तीन घण्टे पूर्णांक—100 अंक

अवधेयम्—20 प्रतिशत अंक संस्कृत भाषा के माध्यम से पूछे जाने वाले प्रश्नों के लिए निर्धारित हैं।

1. जन्मपत्र निर्माण पद्धति 60 अंक
   - (क) जन्मांगचक्र निर्माण प्रकार ग्रहस्पष्ट, भाव स्पष्ट=20 अंक (इंडियन एफेमेरीज या परम्परागत प्राचीन पद्धति के आधार पर)
   - (ख) होरा, द्रेष्काण, सप्तमांश, नवमांश, द्वादशांश, त्रिंशांश चक्र, निर्माण पत्र एवं सामान्य फल कथन= 20 अंक
   - (ग) विंशोत्तरी, अष्टोतरी एवं योगिमी दशा, अन्तर्दशा एवं प्रत्यन्तरर्दशा निर्माण = 20 अंक

Asstt. Registrar (Acad I)
University of Raja...
Jaipur

2. हस्तरेखा विज्ञान—सम्पूर्ण गोपेश कुमार ओझा 20 अंक
3. लघुपाराशरी—महर्षि पाराशर प्रणीत-उडूदायप्रदीप, योगाध्याय आयर्विचाराध्याय एवं दशाफलाध्याय मात्र

सहायक ग्रन्थ–

1. बृहद् भारतीय कुण्डली विज्ञान, सत्यदेवशर्मा, जगदीश संस्कृत पुस्कालय, जयपुर
2. ज्योतिषसर्वस्व, पं. सुरेशचन्द्र मिश्र, रंजन पब्लिकेशन, नई दिल्ली
3. हस्तरेखाविज्ञान, ले. गोपेश कुमार ओझा, प्रकाशक–मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली
4. लघुपाराशरी समीक्षा, डॉ0 शुकदेव चतुर्वेदी, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली

सभी वर्गों के लिए अनिवार्य प्रश्नपत्र

चतुर्थ प्रश्नपत्र– व्याकरण एवं निबन्ध

समय– तीन घण्टे पूर्णांक–100

अवधेयम् प्रश्नपत्र हिन्दी भाषा में बनाया जायेगा। 20प्रतिशत अंक संस्कृत भाषा के माध्यम से पूछे जाने वाले प्रश्नों के लिए निर्धारित हैं। शेषप्रश्नों के उत्तर हिन्दी, अंग्रेजी अथवा संस्कृत भाषा के माध्यम से दिये जा सकते हैं।

1. व्याकरण लघु सिद्धान्त कौमुदी
   1. कृत्यप्रक्रिया एवं पूर्वकृदन्त 20 अंक
   2. तद्धित–शैषिक प्रकरणपर्यन्त 10 अंक
   3. समास(तत्पुरुष, बहुव्रीहि, अव्ययीभाव, द्वन्द्व) 20 अंक
   4. कारक प्रकरण सिद्धान्तकौमुदी से 15 अंक
2. निबन्ध(संस्कृत में) 20 अंक
   कम से कम 12 निबन्ध के विषय दिये जाने चाहिए, जिनमें से सभी वर्गों अ, ब, स, द, इ, एफ पर प्रत्येक से कम से कम दो विषयों में निबन्ध लिखना चाहिए। उनमें से विद्यार्थी को यथेष्ट एक ही विषय पर निबन्ध लिखना अपेक्षित है।
3. व्याकरण महाभाष्य(पस्पशाह्निक) 15 अंक

विस्तृत अंक–विभाजन

1.	कृत्यप्रक्रिया व पूर्वकृदन्त	10 पद पूछकर 5 की सिद्धि	20 अंक
2.	तद्धित	8 पद पूछकर 4 की सिद्धि	10 अंक
3.	समास	10 पद पूछकर 5 की सिद्धि	20 अंक
4.	कारक	6 सूत्रों में से 3 की सोदाहरण व्याख्या	15 अंक
5.	महाभाष्य	दो में से एक प्रश्न	15 अंक

Asstt. Registrar (Acad I)
University of Rajasthan
Jaipur

6. निबन्ध	प्रत्येक ग्रुप के दो-दो विषयों अर्थात् 2 में से एक निबन्ध	20अंक
कुल योग		100 अंक

सहायक पुस्तकें-

1. लघुसिद्धान्तकौमुदी-भीमसेन शास्त्री
2. लघुसिद्धान्तकौमुदी- महेशसिंह कुशवाहा
3. डॉ. मंगलादेव शास्त्री, प्रबंध प्रकाश इलाहाबाद
4. ऋषिकेश भट्टाचार्य, प्रबन्ध मंजरी
5. पं. गिरिधरशर्मा चतुर्वेदी-निबन्ध मंजरी, शारदा मंदिर, दिल्ली
6. बी.एस. आप्टे- गाइड (संस्कृत कम्पोजीशन)
7. हंसराज अग्रवाल-प्रबन्धप्रदीप
8. डॉ. कपिलदेव द्विवेदी-प्रौढरचानुवादकौमुदी
9. डॉ. बाबूराम त्रिपाठी, संस्कृत व्याकरण, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
1. माधवीय धातुवृत्ति-माधवाचार्य
11. श्री तरंगिणी-गुणरत्न महादधिः
12. डॉ. नारयणशास्त्री कांकर-व्याकरण साहित्य, अजमेरा बुक कं., जयपुर
13. कारकदीपिका-श्री मोहनबल्लभ पंत, रामनारायणलाल बेनीमाधव, प्रयाग

निम्नलिखित शोध-पत्रिकाएं भी पठनार्थ अनुमोदित है-

1. सागरिका- संस्कृत विभाग, सागर विश्वविद्यालय, सागर
2. संस्कृतप्रतिभा- साहित्य अकादमी, दिल्ली
3. सारस्वतीसुषमा-वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
4. भारती (मासिक) भारतीय कार्यालय, जयपुर
5. स्वरमंगला (त्रैमासिक) राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर
6. मागधम- एच.डी. जैन कालेज, मगध विश्वविद्यालय, आरा, बिहार

पंचम प्रश्नपत्र-प्राचीन संस्कृत साहित्य

समय-तीन घण्टे पूर्णांक- 100 अंक

अवधेयम्- प्रश्नपत्र हिन्दी भाषा में बनाया जायेगा। 2 प्रतिशत अंक संस्कृत भाषा के माध्यम से पूछे जाने वाले प्रश्नों के लिए निर्धारित हैं। शेष प्रश्नों के उत्तर हिन्दी, अंग्रेजी अथवा संस्कृत भाषा के माध्यम से दिये जा सकते हैं।

1. विक्रमांकदेवचरितम् (प्रथम सर्ग)-बिल्हण	20अंक
2. अर्थशास्त्र-कौटिल्य (प्रथम व तृतीय अधिकरण)	20अंक
3. शिशुपालवध- माघ (प्रथम सर्ग)	20अंक

Asstt. Registrar (Acad I)
University of Rajasthan
Jaipur

30

4. हर्षचरितम् (पञ्चम् उच्छ्वास)-अश्वघोष (तृतीयसर्ग) 20अंक

5. सामान्य प्रश्न 20 अंक

विस्तृत अंक-विभाजन

1. विक्रमांकदेव	चार श्लोकों में से दो की व्याख्या जिनमें से एक की संस्कृत में	20अंक
2. अर्थशास्त्र	चार श्लोकों में से दो की व्याख्या	20अंक
3. शिशुपालवध	चार श्लोकों में से दो की व्याख्या जिनमें से एक की संस्कृत में	20अंक
4. बुद्धचरितम्	चार श्लोकों में से दो की व्याख्या	20अंक
5. उपर्युक्त 1 व सामान्य प्रश्न	2 प्रश्न पूछकर 1 का उत्तर	10अंक
6. उपर्युक्त 3 व 4 में सामान्य 2 प्रश्न पूछकर 1 का उत्तर		10अंक
कुल योग		100 अंक

सहायक पुस्तकें-

1. विक्रमांकदेवचरित (प्रथम सर्ग) साहित्य निकेतन, कानपुर
2. शिशुपालवध-मल्लिनाथकृत सर्वंकषा श्रीहरगोविन्द शास्त्री कृत मणिप्रभद हिन्दी व्याख्या सहित
3. रघुवंशमहाकाव्यम्- मल्लिनाथकृत संजीवनी टीकासहित-प्रो. हरिदामोदर वेल्णकर

अथवा आधुनिक संस्कृत-साहित्य

1. विवेकानन्दविजयम्-डॉ. श्रीधरभास्कर वर्णेकर 35 अंक

क- नाटक के अंशों की व्याख्या हेतु- 25 अंक

ख- आलोचनात्मक प्रश्न- 10अंक

2. कथानकवल्ली कलानाथ शास्त्री 25 अंक

क- व्याख्या- 15 अंक

ख- समालोचनात्मक प्रश्न- 10अंक

3. मधुश्च्छन्दा- डॉ. हरिराम आचार्य 25 अंक

क- व्याख्या- 15 अंक

ख- समालोचनात्मक प्रश्न- 10अंक

Asstt. Registrar (Acad I)
University of Rajasthan
Jaipur

31